साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 2, अंक 27, दिसम्बर(द्वितीय), 2017

फूल और कांटा (एक लव स्टोरी)

इश्क फूलों से सभी करते हैं
मुझे तो बस कांटो से प्यार है
तुम फूलों को भले ही चाहो
बुकिं बना गर्लफ्रेंड पटा लो
फिर चाहे इनकी माला बना
अपने इष्टदेव को रिझा लो

क्या सोचा कभी इन कांटों की
बिरहा –सी हालत होती है
जो कली को दुनिया की नजर से बचाता है
मन से इश्क फरमाता है और कली को फूल बनाता है

तुम वैलेंटाइन के मौके पर
गुलाब तोड़ ले आते हो , चलो अपना प्यार जताते हो
फिर कांटे को क्यों तड़पाते हो
उसे भी प्यार जताना है
दुनिया को बतलाना है

कि चूभना उसकी फितरत नहीं
पर जब तुम उसकी मासूका को
उसकी आंखों के ही सामने
बे–आबरु कर डालते हो
तो बेबस–बेजान एक कांटा भी विद्रोही बन जाता है
तितली के पर कतरता है और भौरों के तन भेद जाता है।।

कृपया अपनी प्रतिक्रिया sahityasudha2016@gmail.com पर भेजें